IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 3, November 2022
Impact Factor: 6.252

मलिन बस्ती में निवासरत लोगों का सामाजिक, आर्थिक एवं स्वस्थ्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन (इलाहाबाद शहर के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. श्रीनिवास मिश्र[1] and जितेन्द्र कुमार यादव[2]

प्राध्यापक, समाजशास्त्र, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमरपाटन, सतना (म.प्र.)[1]

शोधार्थी, समाजशास्त्र, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)[2]

शोध सरांश

प्रस्तुत शोध पत्र में मलिन बस्ती मे निवासरत लोगों से लिया गया है। वर्तमान में औद्योगिक केन्द्रों में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि हुई है एवं उसी के अनुपात में मकानों का निर्माण नही हो पाने के कारण वहां अनेक गंदी बस्ती बन गयी है। विश्व के प्रत्येक प्रमुख नगर में नगर के पांचवें भाग से लेकर आधे भाग तक की जनसंख्या गंदी बस्ती अथवा उसी के समान दशाओं वाले मकानों में रहती है। नगरों की कैन्सर के समान इस वृद्धि को विद्वानों ने पत्थर का रेगिस्तान व्याधिकी नगर नरक की संक्षिप्त रुपरेखा आदि कहकर पुकारा है। अध्ययन हेतु उद्देश्यपूर्ण निर्देशन के अध्ययन से 100 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है तथ्यों के संकलन हेतु साक्षत्कार–अनुसूची का प्रयोग किया गया है शोध अध्ययन से ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र में लोगों का स्वस्थ्य निम्न स्तर का है तथा लोगों को सामाजिक, आर्थिक समस्यओं का समना करना पड़ता है।

मुख्य शब्दः गंदी बस्ती, निवासरत लोग, सामाजिक, आर्थिक, स्वस्थ्य, समस्या आदि।

प्रस्तावना

मलिन बस्ती वर्तमान में वैश्विक समुदाय की एक प्रमुख समस्या बन गई है, आज विश्व का ऐसा कोई भी देश नहीं हैं, जो पूर्णतः मलिन बस्ती की समस्या से मुक्त हो। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट मार्च 2010 के अनुसार 227 मिलियन, (22 करोड़ 70 लाख) जनसंख्या विश्व के मलिन बस्ती में निवास करती है। इसी तरह अन–हेवीटेट रिपोर्ट के अनुसार 20 मिलियन से ऊपर फिलीपिंस के लोग मलिन बस्ती में निवास करते है, तथा कुछ शहरों में 50 प्रतिशत से अधिक 11 मिलियन आबादी बस्ती मे निवास करती है। 2001 की जनगणना के अनुसार 42,5,78,150 जनसंख्या गंदी बस्ती में रहने वाले लोगों की संख्या 93 मिलियन है, जो ब्रिटेन की जनसंख्या से दोगुनी है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 3, November 2022
Impact Factor: 6.252

औद्योगिक नगरों में इन बस्तियों को अलग–अलग नामों से संबोधित किया जाता है। उदाहरण के लिए मुंबई में मलिन बस्तियों को 'चाल' कहा जाता है जबकि कलकत्ता में इन्हे केवल 'बस्ती' के नाम से पुकारा जाता है। इलाहाबाद में ऐसी बस्तियाँ 'पुरवा' और 'अहाता' के नाम से जानी जाती है तथा दिल्ली में यह क्षेत्र 'कटरा' के नाम से जाना जाता है। देश की इन गंदी बस्ती की सर्वाधिक जनसंख्या मुबंई शहर मे निवास करती हैं, जहॉ 54.6 प्रतिशत लोग गंदी बस्ती मे निवासरत हैं, इसी तरह कोलकाता में 32.8 प्रतिशत, सूरत में 20.89 प्रतिशत पूणे में 19.39 प्रतिशत, चेन्नई में 18.88 प्रतिशत एवं दिल्ली में 18.74 प्रतिशत लोग मलिन बस्ती में निवास करते है। विश्व बैंक द्वारा जारी वर्ष 2004–05 के अपने रिपोर्ट में कहा है कि भारत देश में कुल गरीबी का 26 प्रतिशत गरीबी नगरीय क्षेत्र में होने का उल्लेख किया है।

मलिन बस्तियों में मकान अंधेरे व सीलनयुक्त होते है। उनमें शौचालय, स्नानघर, पानी, बिजली, हवा एवं रोशनी की पर्याप्त सुविधाओं का अभाव पाया जाता है। साथ ही इनमें मच्छर खटमल, जुंओं, छिपकलियों, चूहों और बीमारी के कीटाणुओं की बहुलता पायी जाती है। निवास की यह अर्द्ध मानवीय दशा है। यह मानव जाति की शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से कमजोर पीढ़ी को जन्म दे रही है।

मलिन बस्ती की विशेषताएं

मलिन बस्ती की अवधारणा को अधिक स्पष्ट करने के लिए हम यहॉ नेल्स एण्डरसन द्वारा उल्लेखित विशेषताओं का वर्णन करेंगे

1. **बनावट –** यह सभी मलिन बस्तियों की सार्वभौमिक विशेषता है । भवन चौगान एवं गलियों की दृष्टि से बनावट अधिक प्राचीन युगों पुरानी और गिरी हुई दिखायी देती है।
2. **आर्थिक स्थिति–** सामान्यतः मलिन बस्ती मे कम आय वाले लोग रहते है। यघपि कुछ ऐसे भवन भी हो सकते है जो जीर्ण–शीर्ण है किन्तु उनमे रहने वाले लोग गरीब नही है। फिर भी गन्दी बस्ती एक गरीबी का क्षेत्र होता है। देसाई व पिल्लई लिखते है गन्दी बस्ती कि सर्वाधिक महत्वपूर्ण एंव सार्वभौमिक विशेषता गरीबी है। गन्दी बस्तियों मे रहने वाले लोग बाजार द्वारा तय किया हुआ किराया देने मे असमर्थ होते है।
3. **अत्यधिक भीड़–भाड़युक्त–** मलिन बस्ती के क्षेत्र मे मकानों की भीड़–भाड़ अथवा मकानों में लोगों कि भीड़–भाड़ होती है और लोग वहॉ खाली पड़ी जमीन पर अनधिकृत कब्जा किए होते हैं।
4. **स्वास्थ्य और सफाई–**मलिन बस्ती मे जैसा कि इसके नाम से ही प्रकट होता है दूसरे निवासों की तुलना मे स्वच्छता और सफाई की सार्वजनिक सेवाओं का अभाव होता है। अनेक कारणों से यहॉ

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 3, November 2022
Impact Factor: 6.252

बीमारी व मृत्यु–दर अधिक होती है। अमरीका के सिरदर्द का इलाज करने वाले अस्पताल ने बताया कि 92 प्रतिशत सिरदर्द के मरीज गन्दी बस्ती के थे।

मलिन बस्तियों के विकास के कारक

मलिन बस्तियों का निर्माण एवं विकास अनेक कारकों का परिणाम है। उनमें से प्रमुख निम्नांकित है

1. **औद्योगीकरण एवं नगरीकरण–** औद्योगिक एवं नगरीकरण ने मलिन बस्तियों को जन्म दिया। उद्योगों में काम करने के लिए गांवों से आने वाले लोगों को निवास के लिए जब कम किराए पर अच्छे मकान उपलब्ध नही हो पाते तो वे गन्दे मकानों में रहने लगते हैं अथवा खाली पड़ी भूमि पर अनाधिकृत कब्जा कर कच्चे मकान बना लेते हैं नगर की परिधि एवं उद्योगों के आस पास उद्योगों में काम करने वाले श्रमिकों द्वारा ऐसी ही बस्तियों का निर्माण किया जाता है।
2. **ग्रामीण बेकारी**– ग्रामों में उद्योगों एवं कृषि के पतन के कारण लोग व्यवसाय की तलाश में नगरों में आने लगतें है और नगरो में आने पर भी वे अपनी ग्रामीण निवास की आदतों को नही छोड़ पाते हैं और ऐसी बस्तिया बनाकर रहने लगते हैं जिन्हें हम ग्रामीण मलिन बस्तियां कहतें है।
3. **जनसंख्या में वृद्धि–** जनसंख्या में वृद्धि जितनी तीव्र गति से हुई उसी तीव्र गति से मकानें का निर्माण नही होने से लोगों के लिए आवास का अभाव पैदा हुआ और लोग भीड़ भाड़ युक्त माकनों में अथवा एक ही मकान में कई परिवार मिलकर रहने लगे फलस्वरुप मलिन बस्तियां पनपी।
4. **श्रमिको की अधिकता –** नगरों में श्रमिकों की अधिकता होती है। वे अपने कारखाने एवं काम के स्थान के पास ही रहना चाहते है और वे मलिन बस्तियों में रहना ही पसन्द करते है।

मलिन बस्तियों के दुष्परिणाम

1. **स्वास्थ्य का हांस–** आवास की दुर्व्यवस्था होने एवं मलिन बस्तियों में रहने से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। मानव के लिए शुद्ध हवा जल एवं रोशनी अति आवश्यक है। इनके अभाव में कई प्रकार की बीमारियां फैलती है और शरीर कमजोर हो जाता है। डॉ. अमर नारायण अग्रवाल ने अपनी पुस्तक इण्डस्टियल हाउसिंग इन इण्डिया में लिखा है मुम्बई के आस पास बनी हुई चाले अहमदाबाद की भूमि के नीचे बने हुए मकानों की कतारें कानपुर लखनऊ और हावड़ा की आन्तरिक बस्तियां जूट मिल के गांव वाले छप्पर कोयले की खनों के गन्दे धावरे तथा चेन्नई

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 3, November 2022
Impact Factor: 6.252

के औद्योगिक कस्बों के गन्दे छप्पर सभी तपेदिक और दुसरे श्वांस रोगों के घर बन गए है। मलिन बस्तियों में मृत्यु दर अन्य स्थानों की बजाय अधिक है।

2. **सांस्कृतिक स्तर में हास–** दयनीय आवास व्यवस्था के कारण लोगों के सांस्कृतिक स्तर में गिरावट आ जाती है। वेश्यागमन के कारण लोगों का नैतिक पतन हो जाता है।
3. **आय में कमी–** आवास की बुरी व्यवस्था व्यक्ति की कार्य क्षमता घटाती है जिसके फलस्वरुप व्यक्ति की आय कम हो जाती है और वह गरीबी की स्थिति से छुटकारा पाने में असमर्थ होता है।

शोध अध्ययन का उद्देश्यः

1. उत्तरदाताओं की सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि ज्ञात करना ।
2. उत्तरदाताओं की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को ज्ञात करना।
3. उत्तरदाताओं में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता ज्ञात करना।

शोध उपकल्पनाः प्रस्तुत अध्ययन में निम्न शोध उपकल्पना है

1. स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता की कमी होना।
2. सर्वेक्षित बस्तियाँ अशिक्षा, गरीबी, बीमारी के व्यापकता के कारण पिछड़ी हुई है।
3. गंदी बस्ती में निम्न स्तर आय वाले लोग रहते हैं।

अध्ययन पद्धति :

शोध अध्ययन में अध्ययन पद्धति को चार भागों में विभक्त कर स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र का संक्षिप्त परिचयः

शोध अध्ययन मलिन बस्ती मे रहने वाले लोगों के स्वास्थ्य के स्तर का समाजशास्त्रीय अध्ययन (इलाहाबाद शहर के विशेष संदर्भ में) विषय पर आधारित है। इलाहाबाद नगर के ऐतिहासिक, पुरातात्विक एवं सांस्कृतिक स्थलों में कुछ ऐसे स्थल है, जिन्हें पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित घोषित किया गया है, जो धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व के कारण राष्ट्रीय धरोहर के रूप में विख्यात है। इन्हें स्थलों के माध्यम से इस संगम तट पर आने वाले देशी एवं विदेशी पर्यटकों तथा श्रद्धालुओं पर यहाँ के प्राचीन जीवन–दर्शन संस्कृति एवं सभ्यता की एक अमिट छाप पड़ती है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 3, November 2022
Impact Factor: 6.252

इलाहाबाद नगर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या–2 पर स्थित है, जो नगर को कानपुर एवं वाराणसी नगरों से सुसम्बद्ध करता है। यह नगर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से 204, वाराणसी से 126, कानपुर से 201, गोरखपुर से 288, प्रतापगढ़ से 64 एवं मिर्जापुर से 90 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। क्षेत्रीय सम्बद्धता के अतिरिक्त व्यापारिक दृष्टिकोण से यह देश के अन्य महत्वपूर्ण नगरों से भी सीध जुड़ा हुआ है। यह नगर उत्तर मध्य रेलवे का मुख्यालय है तथा रेलमार्गों द्वारा देश के सभी प्रमुख नगरों से भलीभाँति सुसम्द्ध है। नगर के एतिहासिक/धार्मिक/शैक्षणिक महत्व तथा तीव्रगति से हो रहे भौतिक विकास के फलस्वरूप दिन–प्रतिदिन बढ़ते हुए यातायात दाब के कारण यहाँ देश के विभिन्न अंचलों से अधिकाधिक रेलों का आवागमन होता है। नगर में भीड़ को नियंत्रित करने एवं नागरिकों की सुविधा के लिए झूँसी, फाफामऊ, प्रयागघाट, रामबाग, नैनी एवं दारागंज आदि छोटे–छोटे रेलवे स्टेशन बनाए गये हैं तथा इलाहाबाद जंक्शन को अत्याधुनिक तकनीक एवं साजसज्जा के साथ विकसित किया गया है।

उत्तरदाताओं का चयनः इलाहाबाद नगर के एक झुग्गी झोपडी बस्ती से 100 परिवार का चयन अध्ययन हेतु किया गया हैं।

तथ्य संकलन के उपकरण एवं प्रविधिः प्रस्तुत शोध अध्ययन में मलिन बस्ती में रहने वाले लोगो के स्वास्थ्य संबंधित शोध परख तथ्यों को ज्ञात करने के लिए चयनित उत्तरदाताओं से तथ्य सकंलन के महत्वपूर्ण उपकरण साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन प्रविधि द्वारा तथ्यों का संकलन किया गया है।

तथ्य संकलन के उपकरण एवं प्रविधिः प्रस्तुत शोध अध्ययन में मलिन बस्ती में रहने वाले लोगो के स्वास्थ्य संबंधित शोध परख तथ्यों को ज्ञात करने के लिए चयनित उत्तरदाताओं से तथ्य सकलंन के महत्वपूर्ण उपकरण साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन प्रविधि द्वारा तथ्यों का संकलन किया गया है।

तालिका कमांक 01

उत्तरदाताओं के परिवार के सदस्यों मासिक आय

क्रमांक	मासिक आय (रू मे)	आवृत्ति प्रतिशत	प्रतिशत
1.	2000 रूपये तक	70	70
2.	2000–4000	12	12
3.	4000–6000	11	11
4.	6000–8000	07	07
योग –		100	100

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 3, November 2022
Impact Factor: 6.252

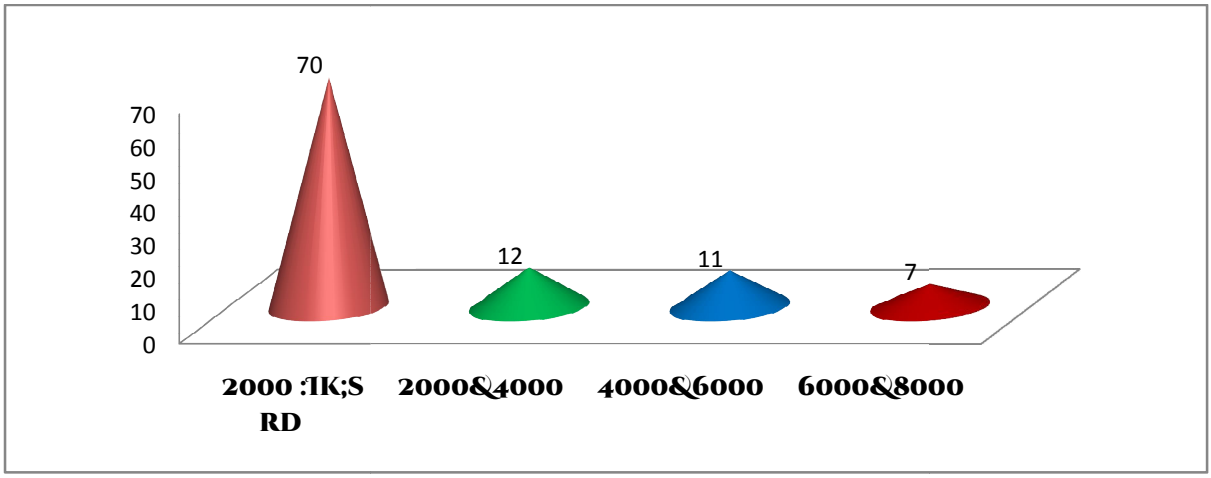

उपराक्त तालिका से स्पष्ट है कि अध्ययनगत समूह में उत्तरदाताओं के परिवार के सदस्यों का मासिक आय में 2000 रू. कि आय 70 प्रतिशत 2000– 4000 रू. कि आय 12, प्रतिशत 4000–6000 रू. के आय 11 प्रतिशत 6000–8000 रू. की आय 7 प्रतिशत है।

तलिका क्रमांक 02

उत्तरदाताओं के मकान में उपलब्ध सुविधाएं

क्र.	सुविधाएं	हॉ		नही		योग	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	पर्याप्त कमरें	90	90	10	10	10	100
2.	किचन	30	30	70	70	10	100
3.	ड्राइगंरूम	–	–	100	100	–	–
4.	बाथरूम	40	40	60	60	10	100
5.	शौचालय	20	20	80	80	10	100
6.	पयेजल	40	40	60	60	10	100
7.	नल	60	60	40	40	10	100
8.	विद्युत	100	100	–	–	10	100

उपराक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं के मकान में उपलब्ध सुविधाओं में 90 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास पर्याप्त कमरे है शेष 10 प्रतिशत के पास पर्याप्त कमरे नहीं है इसी तरह अधिकतम 70 प्रतिशत उत्तरदाता के पास किचन नहीं है जबकि न्यूनतम 30 प्रतिशत उत्तरदाता के पास किचन की सुविधा है, प्रतिशत उत्तरदाता के पास ड्रइंगरूम नहीं है। बाथरूम सुविधा में केवल 40 प्रतिशत उत्तरदाता पास

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 3, November 2022
Impact Factor: 6.252

सुविधा उपलब्ध है जबकि शेष 60 के पास नहीं है इसी प्रकार शौचालय की सुविधा में सर्वाधिक 80 प्रतिशत के आवास मे यह सुविधा उपलब्ध नहीं है जबकि केवल 20 प्रतिशत के पास सुविधा उपलब्ध है। पेयजल सुविधा में अधिकतम 60 प्रतिशत के आवास में सुविधा नहीं है तथा न्यूनतम 40 प्रतिशत उत्तरदाता के आवास मे यह सुविधा है, पयेजल हेतु नल की सुविधा में अधिकतम 60 प्रतिषत उत्तरदाता के आवास में यह सुविधा है जबकि शेष 40 प्रतिशत के पास सुविधा नहीं है तथा विधुत की सुविधा प्रतिशत उत्तरदाताओं के आवास में उपलब्ध है।

सुझाव

गदी बस्तियों के उन्मूलन हेतु निम्नलिखित सुझाव उपयागी हो सकते हैं–

1. स्वास्थ्य संबंधी, पयेजल सबंधी, शिक्षा संबंधी, साफ सफाई संबधी समस्याओं में पूर्ण रूप से ध्यान दिया जाए।
2. भविष्य में नगरों एवं औद्योगिक केन्द्रों का विकास व्यवस्थित रूप से होना चाहिए।
3. नगरो में गंदी बस्तीयों को समाप्त कर शासन के सहयागे से इनमें रहने वाले लागों का सुविधा जनक मकान निर्मित कर आसान किश्तों में दिया जाए।
4. महिलाओं के स्वास्थ्य तथा शिक्षा संबंधित समस्याओं पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाए।

निष्कर्ष

मलिन बस्ती में निवासरत लागों की सामाजिक–आर्थिक एवं स्वस्थ्य संबंधि उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में लोगों कि स्थिति पर बस्ती के सामाजिक परिवेश का प्रभाव पड़ता। यह आर्थिक स्थिति निम्न स्तर कि है तथा स्वथ्य सुविधा का अभाव पाया गया। मूलभूत सुविधाओं कि कमी है जिसके कारण इन लोगों को स्वस्थ्यगत समस्यओं का समना करना पड़ता है।

Referances

[1]. World News . Global . development un. Report march 2010
[2]. http. // Indian vision . com / news / article / national 98404.
[3]. Sensus of India 2001.
[4]. India Country over view . September – 2011 WWW. World.Bank org in.

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 3, November 2022
Impact Factor: 6.252

[5]. State UTS – Wise Urban and Slum population IN India 2001.

[6]. WHO and unicef 2002 global . water supply . and sanitilation assessment 2000 Report Newyork WHO And unicef.

[7]. Dyos H. J Canadine ,David Reader 1982 http.// books goggle com.

[8]. योजना पत्रिका के विभिन्न अंक

[9]. कुरूक्षेत्र पत्रिका के विभिन्न अंक